GS PAPER – I

Role of Women and Women's Organization

Dr. S. S. Pandey

1

महिला, महिला संगठन एवं महिला आंदोलन

विश्व में महिला आंदोलन का उद्भव

- Liberal Feminism
- Socialist Feminism
- Radical Feminism
  - Sepratism
  - Lasbianism
- Black Feminism
- Eco Feminism

2

महिला

संसार

- पुरुष
- स्त्री
  - Sex
  - Gender → लिंग असमानता → धर्म के आधार पर मान्यता

↓

तर्कबुद्धिवाद के विकास एवं विज्ञान के विकास के साथ धर्म कमजोर, फलतः धर्म का प्रभाव कमजोर

3

महिला

तर्कबुद्धिवाद के विकास एवं विज्ञान के विकास के साथ धर्म कमजोर, फलतः धर्म का प्रभाव कमजोर

↓

मानववाद / Humanism

↓

मानव केन्द्रीत स्वतंत्रता, समानता और सामाजिक न्याय जैसे मूल्यों का विकास, फलतः दुनियाँ के सभी समाजों में प्रत्येक तरह की असमानता का विरोध प्रारंभ

↓

फलतः लिंग असमानता का विरोध भी प्रारंभ

↓

महिला आंदोलन

- प्रथम चरण (1789-1950)
- द्वितीय चरण (1950 के बाद)
- तृतीय चरण (1990 के बाद)
- चतुर्थ चरण (2010 के बाद)

4

विश्व में महिला आंदोलन

Dr. S. S. Pandey

5

प्रथम चरण (1789-1950)

↓

6

विश्वव्यापी स्वरूप; USA और UK में मुख्य रूप से केंद्रीत; महिलाओं हेतु मुख्यतः राजनीतिक अधिकारों एवं अन्य नागरिक अधिकारों की माँग पर बल

7

फ्रांस में महिला आंदोलन

↓

8

1. 1789– फ्रांसीसी क्रांति– National Assembly द्वारा– मानव एवं नागरिक अधिकारों की घोषणा– महिलाओं की उपेक्षा

↓

9

2. 1789– Olympe de Gouges द्वारा फ्रांसीसी क्रांति के सफलता की प्रासंगिता को चुनौती; Gouges को मृत्यु दण्ड– फलतः फ्रांस में महिला आंदोलन की धीमी गति से शुरूआत

↓

3. अन्ततः 1944 में, फ्रांस में महिलाओं को मताधिकार प्राप्त

10

11

इग्लैंड में महिला आन्दोलन

12

1. 1688– इग्लैंड में गौरवपूर्ण क्रांति– पुरुषों को नागरिक अधिकार प्राप्त और महिलाएँ वंचित

13

2. 1792– Mary Wollstonecraft की पुस्तक 'A Vindication of the Rights of Woman' तथा 1869 में John Stuart Mill की पुस्तक 'The Subjection of Women' में महिलाओं की निम्नतर स्थिति का विश्लेषण तथा 1884 में Friedrich Engels द्वारा 'The Origin of the Family, Private Property and the State' में महिलाओं की निम्नतर स्थिति / लिंग असमानता का आर्थिक संदर्भ में विश्लेषण

14

3. 1888 में Woman's Liberation Front का गठन और लिंग समानता के लिए प्रयास प्रारंभ

4. फलतः 1918-1928-1948 में इग्लैण्ड की महिलाओं को मताधिकार प्राप्त

15

अमेरिका में महिला आन्दोलन

16

1. 1776– अमेरिकी क्रान्ति
2. 1789– Bill of Rights की घोषणा जिसमें महिलाओं की उपेक्षा
3. 1830– राजनीतिक अधिकारों के लिए महिला आन्दोलन की शुरूआत (दास प्रथा आंदोलन के साथ)– Angelina Grimke के नेतृत्व में

17

4. 1869– National Woman Suffrage Association तथा American Woman Suffrage Association का गठन और इस दिशा में प्रयास तीव्र
5. फलतः 1920 में महिलाओं को मताधिकार प्राप्त

18

- 19वीं सदी के उत्तरार्ध से 20वीं सदी के पूर्वार्ध तक लोक कल्याणकारी राज्य का उद्भव और महिलाओं को नागरिक अधिकारों की प्राप्ति संभव
- 20वीं सदी के मध्याह्न तक प्रथम विश्वयुद्ध एवं द्वितीय विश्वयुद्ध

19

- द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद यूरोप एवं अमेरिका का विकसित देश के रूप में उभार– श्रम की माँग में वृद्धि– स्त्रियों के लिए रोजगार के अवसर में वृद्धि– फलतः उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता में वृद्धि

20

- इसके बावजूद महिलाओं के साथ, घर में तथा कार्यस्थल पर भेद-भाव जारी
- फलतः 1950 के बाद महिला आन्दोलन का द्वितीय चरण प्रारंभ

द्वितीय चरण
(1950 के बाद)

21

1950 के बाद (द्वितीय चरण में) महिला आन्दोलन तीन विचारधाराओं पर आधारित रहा–

1. उदारवादी महिलावाद
2. समाजवादी एवं मार्क्सवादी महिलावाद
3. रेडिकल महिलावाद

22

1. उदारवादी महिलावाद
(1789 के धारा का नवीन रूप)

23

प्रमुख मान्यताएँ

1. लिंग असमानता का कारण– महिलाओं को नागरिक अधिकारों से वंचित करना है
2. लिंग असमानता का समाधान– महिलाओं को नागरिक अधिकार प्रदान करके संभव है

24

प्रमुख मुद्दा / माँग

1. मताधिकार कानून की माँग
2. शिक्षा प्राप्त करने, सार्वजनिक जीवन में भाग लेने, समान अवसर, स्वतंत्र अभिव्यक्ति, भयमुक्त जीवन जीने आदि अधिकारों की माँग

25

प्रमुख नेता

1. USA में– Betty Friedan – The Feminine Mystique (1963)
2. USA में– National Organization for Women - NOW
(प्रमुख नारा– महिलाएँ सर्वप्रथम मानव हैं)

26

प्रमुख प्रयास

1. 1950-60 में अमेरिका में नागरिक अधिकार आन्दोलन का उद्भव और इसके साथ महिलाओं द्वारा अन्य नागरिक अधिकारों की माँग

27

2. 1970– USA में Take back the Night आन्दोलन– जिसका युरोप के अन्य देशों में विस्तार और महिलाओं द्वारा भयमुक्त जीवन जीने के अधिकार की माँग
3. 1996– फ्रांस में शहीदों को श्रद्धांजली दिया गया, लेकिन यह श्रद्धांजली उनके पत्नियों को समर्पित किया गया

28

2. समाजवादी एवं मार्क्सवादी महिलावाद
(1960 में प्रारंभ तथा समाजवादी एवं मार्क्सवादी विचारधारा पर आधारित)

29

प्रमुख मान्यताएँ

1. लिंग असमानता का कारण– समाज के आर्थिक संरचना में निहित है

30

31

2. आर्थिक संदर्भ में स्त्रियों की पुरुषों पर निर्भरता, उनकी लिंग असमानता का कारण है
3. लैंगिक आधार पर आर्थिक समानता की स्थापना करके, लिंग असमानता को समाप्त किया जा सकता है

32

प्रमुख मुद्दा या माँग

1. विवाह का विरोध और इसे अधीनता का स्वरूप माना गया
2. सम्पति का अधिकार, समान वेतन, घरेलू कार्य को काम का दर्जा, महिला को श्रमिक संगठन बनाने आदि की माँग तथा आर्थिक संगठनों में महिलाओं के उत्पीड़न का विरोध

33

प्रमुख नेता

- M. Dalla Costa

34

किये गये प्रयास

1. 1960-70– अमेरिका में समान काम के लिए समान वेतन की माँग के लिए आंदोलन– फलत: 1973 में समान अधिकार संशोधन पारित– परन्तु अभी तक लागू नहीं (2017 में अमेरिका का निवादा राज्य ERA की पुष्टि करने वाला पहला राज्य बना)

35

2. 1970-80– में Dalla Costa के नेतृत्व में, ब्रिटेन एवं इटली में, घरेलु कार्य को काम का दर्जा देने की माँग– अभी तक नहीं माना गया

36

3. रेडिकल महिलावाद

(1970 में प्रारंभ– पुरुष विरोधी आंदोलन– उदारवादी नारीवाद के प्रतिक्रियास्वरूप यूरोप एवं अमेरिका में उद्भव)

37

प्रमुख मान्यताएँ

1. लिंग असमानता का कारण पितृसत्तात्मक समाज है
2. पितृसत्तात्मक समाज का निर्माण पुरुषों द्वारा किया गया है

38

3. महिलाओं की इस अधीनता का कारण / पितृसत्तात्मक समाज के निर्माण का कारण, महिलाओं का जीव विज्ञान (गर्भधारण एवं यौनिकता) है
4. महिलाओं की अधीनता की समाप्ति, उनके द्वारा पुरुषों के साथ जैविकीय संबंध को समाप्त करके ही संभव है

39

प्रमुख मुद्दा

1. पुरुष सत्ता का विरोध
2. स्त्री को उपभोग की वस्तु मानने का विरोध
3. प्रजनन एवं यौनिकता को स्वयं नियंत्रित करने के अधिकारों की माँग अर्थात् गर्भ नियंत्रण एवं गर्भपात का अधिकार एवं समलैंगिक संबंधों को मान्यता देने की माँग

40

किये गये प्रयास

1. 1960 का दशक– युरोप में 'चेतना जागृति मंच' का निर्माण और पहली बार स्त्रियों द्वारा, पुरुषों के विरोध में और पुरुषों से पृथक अपने अलग समाज के निर्माण पर बल
2. 1968– पुरुष सत्ता का प्रतीक, सौंदर्य प्रतियोगिता का विरोध

41

3. 1972– फ्रांस में 300 फ्रांसीसी महिलाओं द्वारा सार्वजनिक रूप से यह छपवाया गया कि– 'मैंने गर्भपात करवाया'

4. 1982– USA में महिलाओं द्वारा Pentagon (रक्षा मंत्रालय जिसे पुरुष प्रभुत्व एवं शोषण का प्रतीक माना गया) का विरोध

5. 1967-92– समलैंगिक संबंध को मान्यता देने हेतु अनेक आंदोलन

42

रेडिकल महिलावाद का स्वरूप

A. **Separatism—**

प्रमुख मान्यता

1. स्त्री अधीनता का कारण स्त्रियों का यौन सम्बन्ध हेतु पुरुषों पर निर्भरता है।
2. पुरुषों के साथ इस सम्बन्ध को समाप्त करके ही महिला मुक्ति सम्भव है।

43

B. **Lesbianism—(Lesbian Feminism)—**

प्रमुख मान्यता

1. नारीवादी आंदोलन स्त्री-स्त्री सम्बन्धों के प्रति उदासीन रहा है और होमोफोबिया से ग्रसित रहा है।
(पितृसत्तात्मक मूल्यों का प्रभाव कि– समलैंगिक संबंध घृणास्पद एवं विकृत है)

44

2. विषमलैंगिक यौनिकता भी पितृसत्तात्मक समाज के कारण संभव हुआ है।
3. पुरुषों के साथ यौन सम्बन्धों को समाप्त करके ही महिला मुक्ति संभव है।
4. यह Lesbian सम्बन्धों द्वारा ही संभव है।

45

प्रमुख नेता

एड्रियन रिच (USA), सेरी मोकागा (USA) मोनिका विटिग्गा (फ्रांस)

नोटः- उपरोक्त Lesbianism की प्रतिक्रिया में 1969 में स्टोनवाल विद्रोह (New York में) के साथ Gay Liberation Movement का जन्म

46

इस प्रकार 1980 तक आते-आते महिला आंदोलन कई भागों में विभक्त हो गया; जैसे–

1. Liberal Feminism
2. Socialist Feminism
3. Separatist Feminism
4. Lesbian Feminism
5. Black Feminism
6. Eco Feminism

47

Black Feminism

48

प्रमुख मान्यता

1. नारीवादी आंदोलनों में अश्वेत (Black) स्त्रियों की उपेक्षा हुई है।
2. अश्वेत (Black) स्त्रियों की मुक्ति तभी सम्भव है जब White (श्वेत) लोगों से Black (अश्वेत) लोगों की मुक्ति हो जाएगी।

49

प्रमुख नेता

1. ऐंजेला डेविस और एलिस वाकर– इन्होंने Feminism की जगह Womenism शब्द का प्रयोग किया

50

किए गए प्रयास

1. 1972– USA की अश्वेत महिला सांसद के राष्ट्रपति नहीं बनने का विरोध
2. 1978– UK में 'ब्लैक मूवमेंट ग्रुप' का निर्माण

51

3. 1980 के बाद सभी देशों में फैलाव

- भारत में शरद पाटिल के नेतृत्व में इस तरह का आंदोलन क्रियाशील

जब तक ऊंची जातियों से नीची जातियों को स्वतंत्रता नहीं मिलेगी, तब तक लिंग समानता नहीं प्राप्त हो सकती है।

52

- 1995 – बेंगलुरु में रूथ मनोरमा द्वारा NFDW तथा महाराष्ट्र में दलित महिला संगठन का गठन द्वारा दलित नारीवाद का उद्भव

53

Eco Feminism

54

प्रमुख मान्यता

1. पर्यावरण भी महिलाओं की तरह शोषण का शिकार रहा है
2. पर्यावरण को शोषण मुक्त करके ही महिला मुक्ति संभव है

55

प्रमुख नेता

मारिया जेटलिन (USA), वन्दना शिवा (भारत)

56

किए गए प्रयास

1. 1984 में– USA में 'नाभिकीय बिजली घर' का विरोध
2. भारत में 'चिपको आंदोलन'– गौरा देवी के नेतृत्व में
3. भारत में वंदना शिवा द्वारा Eco Feminism का नेतृत्व

57

तृतीय चरण
(Third Wave of Feminism)
(1990 से 2010 तक)

58

(a) 1990 के दशक में USA में प्रारंभ तत्पश्चात् यूरोप एवं ऑस्ट्रेलिया में विस्तार

59

(b) इस काल में महिला आंदोलन कई विचार धाराओं में विभक्त हो गया; जैसे–

1. Intersectional Feminism
2. Trans Feminism
3. Sex Positive Feminism
4. Lipstick Feminism (Slutwalk Movement – Canada .....)
5. Post Modern Feminism
6. Vegetarian Eco Feminism

60

चतुर्थ चरण
(Fourth Wave of Feminism)
(2010 के बाद)

प्रमुख लक्षण

1. *Internet Activism*
2. *Intersectionality & Interlocking Systems of Power* पर विशेष बल

61

विश्व में महिला आंदोलन - समीक्षा

62

1. 1990 के बाद महिला आंदोलन में विखराव और विभिन्न विचारधाराओं में विभक्त
2. समय-समय पर महिला आंदोलन में एकीकरण की प्रवृत्ति का विकास; जैसे-
   USA द्वारा इराक पर आक्रमण का सभी महिलावादियों द्वारा विरोध और संसद में समान प्रतिनिधित्व के मुद्दे पर सभी महिला संगठनों द्वारा संगठित प्रयास आदि

63

3. उपरोक्त आंदोलनों के परिणामस्वरूप.....
   दुनियाँ के लगभग सभी देशों में महिलाओं को कई नागरिक अधिकारों की प्राप्ति संभव हुई है, उनकी आत्मनिर्भरता में वृद्धि हुई है और उनका सशक्तिकरण संभव हुआ है
4. परन्तु.....
   अभी भी अपेक्षित लक्ष्य से दूर है

64

5. मीडिया, एनजीओ एवं युवाओं के सहयोग से आधुनिक शिक्षा एवं आधुनिकता के मूल्यों के प्रसार द्वारा पुरुष मानसिकता को लिंग समानता की दिशा में परिवर्तित करके और विभिन्न क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण के द्वारा, एक आदर्श लिंग समानता से युक्त मानव समाज का निर्माण किया जा सकता है।

65

Dr. S. S. Pandey

भारत में महिलाएँ

66

भारत में महिलाएँ

- जनांकिकी
- महिलाओं से जुड़ी समस्याएँ
- महिलाओं की समस्या के कारण
- समस्या समाधान की दिशा में किए गए प्रयास
- किए गए प्रयासों की समीक्षा
- समस्या समाधान हेतु सुझाव

67

भारत में महिला संगठन एवं महिला आंदोलन

- भारत में महिला आंदोलन का अर्थ
- भारत में महिला आंदोलन के कारण
- भारत में महिला आंदोलन के रूप में किए गए प्रयास
- भारत में महिला आंदोलन का मूल्यांकन

68

भारत में महिला आंदोलन का अर्थ

69

भारत में महिला आंदोलन का तात्पर्य– ऐतिहासिक रूप से भारतीय समाज में लिंग असमानता को दूर करने के लिए किये गए सामूहिक एवं संगठित प्रयास से है।

70

भारत में महिला आंदोलन के कारण

71

1. महिलाओं की निम्न स्थिति
2. आधुनिकता के मुल्यों का प्रसार
3. आधुनिक शिक्षा का प्रसार
4. सुधार आंदोलनों का प्रभाव

72

5. नारीवादी विचारधारा एवं विश्व स्तर पर नारीवादी आंदोलनों का प्रभाव
6. विभिन्न प्रकार के नेतृत्व एवं संगठनों का उद्भव
7. यातायात एवं संचार साधनों का विकास

73

भारत में महिला आंदोलन के रूप में किए गए प्रयास

- प्रथम चरण (1901-32)
- द्वितीय चरण (1947-70)
- तृतीय चरण (1970-90)
- चतुर्थ चरण (1990 से अब तक)

74

प्रथम चरण (1901-32)

1. प्रमुख मुद्दे / लक्षण
   - मताधिकार की माँग पर बल
   - शिक्षा द्वारा महिला एवं परिवार कल्याण पर बल
   - प्रत्येक संगठन में महिला सहभागिता पर बल, न कि केवल महिला सहभागिता पर अर्थात् महिला आंदोलन पुरुष प्रतिस्पर्द्धी नहीं

75

2. प्रमुख संगठन एवं नेता
   - Indian Women's Association (IWA) - 1917
   - All India Women's Conference (AIWC) - 1927
   - Annie Besant, Sarojini Naidu

76

3. प्रमुख घटनाएँ / किये गए प्रयास
   - 1917 में Sarojini Naidu की अध्यक्षता में, महिला प्रतिनिधि मंडल चेम्सफोर्ड से मिला और वोट देने के अधिकार की माँग की
   - 1927– महिला आंदोलन की माँग पर, महिलाओं के शिक्षा का आधार क्या हो इस पर निम्न प्रस्ताव पारित किया गया

77

- ✓ मातृत्व का ज्ञान होना चाहिए
- ✓ घर को खुबसुरत बनाने का ज्ञान होना चाहिए
- ✓ समाज कल्याण में भूमिका निर्वहन का ज्ञान होना चाहिए

78

- 1930– महिला आंदोलन की माँग पर गोलमेज सम्मेलन में तीन आधार पर स्त्री को वोट देने का प्रस्ताव लाया गया
  - ✓ पति के सम्पति के आधार पर
  - ✓ विधवा, जिसके पति को वोट देने का अधिकार प्राप्त था
  - ✓ 21 वर्ष से ऊपर की स्नातक महिलाएँ

79

All India Women's Conference द्वारा इसका विरोध और स्वतंत्र नागरिक के रूप वोट देने के अधिकार की माँग

80

81

- 1932- Communal Award— जिसमें महिलाओं को विधानसभा में सहभागिता हेतु, समुदाय के आधार पर 2.5% का आरक्षण दिया गया

82

AIWC द्वारा विरोध और स्वतंत्र महिला के रूप में आरक्षण की माँग,

परंतु मुस्लिम प्रतिनिधियों द्वारा Communal Award का समर्थन

फलत: महिला आन्दोलन दो भागों में विभक्त एवं कमजोर– फलत: सभी महिला संगठन स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल और महिला आंदोलन शिथिल

83

द्वितीय चरण (1947-70)

1947 के बाद महिला संगठन समाज कल्याण में संलग्न और महिला आंदोलन प्राय: निष्क्रिय- परन्तु तेलंगाना आंदोलन, नक्सलवाड़ी आंदोलन आदि में कुछ संगठन (जैसे- आंध्र महिला सभा, कस्तुरबा उत्थान मण्डल आदि) तथा कुछ महिलाएँ (जैसे- अबला बहन-सबला बहन आदि) सक्रिय रही।

84

तृतीय चरण (1970-90)

1. इस काल में महिला आंदोलन के प्रमुख मुद्दे
   - पर्यावरण संघर्ष, बढ़ती महँगाई के खिलाफ आंदोलन, जमीन पर समान अधिकार की माँग, महिला उत्पीड़न एवं दहेज हत्या का विरोध, मुस्लिम महिलाओं के अधिकार का मुद्दा

85

2. इस काल की प्रमुख घटनाएँ
   - 1970– गौरा देवी के नेतृत्व में चिपको आंदोलन और 1980 के बाद वंदना शिवा के नेतृत्व में Eco Feminism (पर्यावरणीय मुद्दे) को लेकर आंदोलन

86

- 1970 के दशक में JP (जय प्रकाश नारायण) आंदोलन में, बोधगया में मणिमाला, मानसी, नीलम के द्वारा, भूमि के पुनर्वितरण में पुरुष के साथ महिलाओं के नाम दिये जाने की माँग की गयी
- 1970-80– मृणाल गोरे एवं अहिल्या रंगेकर के नेतृत्व में, महँगाई के विरोध में आंदोलन (मुख्यतया महाराष्ट्र में)

87

- 1974 में महिलाओं के विकास पर रिपोर्ट Status of Women in India जारी-

महिलाओं की निम्नतर स्थिति का खुलासा और महिला विकास की दिशा में सरकार के विकास नीति (कल्याणकारी नीति) की आलोचना

88

- 1975 को 'अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष' एवं 1975-1985 को 'अन्तर्राष्ट्रीय महिला दशक' के रूप में, UN द्वारा घोषणा– फलत: वैश्विक महिला आंदोलन के प्रभावस्वरूप भारत में भी महिला आंदोलन तीव्र

✓ इस काल में घरेलू श्रम, समान, मजदूरी, खेतीहर महिलाओं की समस्या, समलैंगिक संबंधों को मान्यता देने जैसे माँग उपेक्षित रहे।

89

चतुर्थ चरण (1990 - आज तक)

A. इस काल में महिला आंदोलन के प्रमुख मुद्दे

1. कामकाजी महिलाओं के मुद्दे, समान वेतन पर जोर, महिलाओं की पारम्परिक हुनर एवं कौशल के आर्थिक मूल्यांकन पर जोर (समाजवादी महिलावाद के द्वारा)

90

2. महिलाओं के विरूद्ध हिंसा (पति के द्वारा पिटाई, दहेज हत्या, कन्या भ्रूण हत्या, वैश्यावृति, अश्लिल साहित्य एवं चित्र का प्रदर्शन आदि) तथा यौन उत्पीड़न (बलात्कार, कार्य स्थल पर यौन शोषण) से संबंधित मुद्दे (उदारवादी महिलावाद द्वारा)

91

3. समलैंगिक संबंधों को सामाजिक मान्यता देने एवं पुरुष सत्ता के विरोध से संबंधित मुद्दे (Radical Feminism द्वारा)

4. गरीब महिलाओं के मुद्दे, दलित महिलाओं के मुद्दे आदि (Sectional Feminism / Dalit Feminism द्वारा)

92

B. इस काल की प्रमुख घटनायें / किये गए प्रयास

1. मुख्यत: 1975 से 2005 तक अनेक स्वायत्त महिला संगठनों का उदभव, जैसे- प्रगतिशील महिला संगठन (1974), पुरोगामी महिला संगठन (1974), स्त्री मुक्ति संगठन (1978), महाराष्ट्र फोरम अगेंस्ट ऑपरेशन ऑफ वोमेन, सहेली (दिल्ली), ASMITA (हैदराबाद), विमोचना (बंगलुरु) आदि– और इन संगठनों में पुरुष सदस्यता पर प्रतिबंध (पुरुष प्रतिस्पर्द्धी महिला आंदोलन की शुरूआत)

93

2. अनेक पार्टी आधारित महिला संगठन जैसे- महिला कांग्रेस (कांग्रेस), दुर्गा वाहिनी (भाजपा), AIDWA (भागपा), एवं FIW(CPI) आदि

- पुरोगामी महिला संगठन एवं स्त्री मुक्ति संगठन द्वारा देवदासियों की समस्या को लेकर आन्दोलन

94

- महाराष्ट्र में दलित महिला संगठन; बेंगलुरु में रुथ मनोरमा द्वारा NFDW (2006) का गठन; शर्मिला रेगे (Writing Caste, Writing Gender) आदि के नेतृत्व में दलित महिलाओं के मुद्दों को लेकर आंदोलन

95

- AIDWA और NFIW (विमला फारूखी) द्वारा कामकाजी महिलाओं को लेकर आंदोलन
- देवकी जैन और वीणा मजुमदार द्वारा घरेलु श्रम का दर्जा दिये जाने की माँग को लेकर आंदोलन एवं राजनीति में महिलाओं को आरक्षण को लेकर आंदोलन

96

- एंजोलिका अरीबम (Fame First Foundation की संस्थापक) द्वारा महिलाओं के राजनीतिक नेतृत्व को बढ़ावा देने हेतु आंदोलन

97

- ईला भट्ट द्वारा सेवा (SEWA - Self Employed Women Association) के नेतृत्व में, महाराष्ट्र और गुजरात में, असंगठित क्षेत्र की महिलाओं के हितों को लेकर आंदोलन
- सुनीता नारायण एवं नंदनी साहू के नेतृत्व में Eco Feminism की विचारधारा के तहत पर्यावरणीय मुद्दे को लेकर आंदोलन

98

- स्त्री हिंसा और यौन उत्पीड़न के खिलाफ अनेक आंदोलन, जैसे- दहेज विरोधी चेतना मंच, कर्णीका, मानसी के नेतृत्व में दहेज कानून में बदलाव लाने हेतु आंदोलन

99

- DU और JNU के छात्रों द्वारा 'स्त्री संघर्ष' और Action India के नेतृत्व में, "Om Swaha" नुक्कड़ नाटक के रूप में, दहेज प्रथा का विरोध; मुम्बई में बलात्कार विरोधी मंच द्वारा स्त्री हिंसा को लेकर आंदोलन तथा 'अदिति' के नेतृत्व में रिता बनर्जी (50 Million Missing) द्वारा भारत में कन्या भ्रूण हत्या एवं कन्या शिशु हत्या के विरोध में आन्दोलन

100

- 2004 में मनोरमा बलात्कार कांड; 2012 में निर्भयाकांड के विरोध में महिला आंदोलन
- मुक्ति, Freedom आदि के नेतृत्व में समलैंगिकता को सामाजिक मान्यता देने के लिए आंदोलन

101

1990 से 2005 तक महिला आंदोलन में तीव्रता आयी, लेकिन यह विभिन्न विचारधाराओं के आधार पर विभक्त रही– परन्तु 2005, मुख्यतः 2010 के बाद, महिला आंदोलन में एकीकरण की प्रवृति का विकास हुआ, जहाँ विभिन्न मुद्दों पर सभी महिला संगठनों ने एकजूट होकर आंदोलन किया, जिसे 16 दिसम्बर 2012 के निर्भया काण्ड के विरोध में उत्पन्न आंदोलन के रूप में देखा जा सकता है–

102

मूल्यांकन

103

A. उपलब्धियाँ

1. दहेज निषेध अधिनियम 1986 एवं 2006
2. बाल विवाह निषेध अधिनियम 2006
3. घरेलू हिंसा से संरक्षण अधिनियम 2006
4. हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम 2005

104

5. अनैतिक व्यापार, निवारण संशोधन अधिनियम 2006
6. PC and PNDT act 1994 और उसमें हुए विभिन्न संशोधन
7. पंचायती राज में महिलाओं को आरक्षण
8. कार्य स्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न से संरक्षण अधिनियम 2013

105

9. महिला विकास नीति में परिवर्तन एवं अनेक विकास कार्यक्रम
10. सरोगेसी विनियमन अधिनियम-2021; MTP Act - 2021; समलैंगिकता एवं LIR पर SC का निर्णय – फलतः महिला सशक्तिकरण संभव

106

B. कमियाँ / असफलता के बिन्दु-

परन्तु अभी भी हम अपेक्षित लक्ष्य से दूर और लिंग असमानता एवं महिलाओं के विरूद्ध हिंसा के कई रूप आज भी विद्यमान

107

C. अपेक्षित लक्ष्य या अपेक्षित सफलता नहीं मिलने के कारण

1. महिला आंदोलन जाति एवं समुदाय के आधार पर विभक्त
2. महिला आंदोलन ढेर सारी विचारधाराओं से प्रभावित एवं दिशाहीन

108

3. महिला संगठनों का विभिन्न राजनीतिक दलों से संबंधित होना और राजनीतिक दलों के हितों के पक्ष में कार्य करना

उपरोक्त कारणों से महिला आंदोलन के रूप सशक्त एवं संगठित प्रयासों की तीव्रता में कमी– फलतः अपेक्षित सफलता नहीं